Original Research Paper

Volume : 5 | Issue : 9 | September 2016 • ISSN No 2277 - 8179 | IF : 3.508 | IC Value : 69.48

चौहानकालीन जैन समुदाय का योगदान

History

KEYWORDS : Anterior Mediastinum, Tumors

बनवारी लाल यादव

शोधार्थी, इतिहास व संस्कृति विभाग, राज.वि.वि., जयपुर ,रजि न0 699/13

विभिन्न ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्त्रोतों से ज्ञात होता है, कि चौहानशासनकाल में जैन धर्म से जुडे व्यक्तियो व उनके द्वारा संस्थापित संस्थाओ का धार्मिक व आर्थिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है। कनयानायानिया महावीर प्रतिमा कल्प लेख (श्रावणादी विस. 1248) नामक गैर फारसी स्त्रोत से ज्ञात होता है कि जैन संघ का चौहानकालीन केन्द्रीय प्रशासन मे व्यापक दखल था। जब चौहान शासन काल को शहाबुदीन द्वारा विस. 1248 में अधिग्रहित कर लिया गया, तो राजा पृथ्वीराज के विश्वसनीय मंत्री रामदेव द्वारा जैनसंघ को यह गुप्त संदेश पहुंचाया गया कि तुर्क शासको से छिपाकर जैन सिक्को व जैन धर्म से जुडी अमूल्य वस्तुओं, व मूर्तियो को मिट्टी मे छुपा दिया जाये। इससे यह सिद्ध होता है कि जैन वर्ग चौहानकालीन अर्थव्यवस्था में सर्राफा का कार्य किया करते थे। शासक वर्ग के साथ साथ जैन वर्ग द्वारा भी सिक्के निर्मित किये जाते थे। सर्राफा होने के साथ शासक का सम्पूर्ण लेनदेन जैन संघ द्वारा निपटाये जाते है। वे एक तरह से शासन की रीढ थे। अतः आपातकाल में जैन संघ को सम्पूर्ण निधि को छिपाने का गुप्त संदेश अग्रेषित किया गया।[1]

चौहानकाल में वैश्य वर्ग अजमेर, भीकमपुर,मारोठ, फलोदी, नागौर, सांभर, नरेना, चाटसु, बिजोलिया व माण्डलगढ नामक वैभवशाली नगरो मे निवास करते थे।

क्षेमधर बोहरा के पुत्र पदमदेवा ने नागोर के कुण्डलपुर मे चन्द्रप्रभ भगवान का विस 1217 में निर्माण करवाया।2 मंदिर निर्माण इसका समर्पण समारोह भी मनाया गया। क्षेमधार ने अजमेर के विधि चैत्य–पार्श्वनाथ मंदिर के मण्डप का निर्माण करवाया।3 क्षेमधर के पुत्र प्रधुम्न व महेन्द्र बाद में जैन साधु बन गये। प्रधुम्न सुरी आसफली (गुजरात) के देवसुरि का शिष्य बना। अजमेर पतनके पश्चात् क्षेमधर को पुत्र जगधर जैसलमेर जाकर बस गया। वहां उसने जैन मंदिर का निर्माण करवाय। जगधर के वंशजो ने खेड, भिलडी, जैसलमेर व अन्य स्थानो पर जैन मन्दिर बनवाये।4

सुराणा परिवार के नागर निवास करते थे। यह पृथ्वीराज के समकालीन था तथा महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत था।5 बिजोलिया शिलालेख (1170) से श्रेष्ठी लोलक के प्राग्वाट परिवार का उल्लेख प्राप्त होता है। लोलक के पूर्वज वैश्रमण ने टोडाराय सिंह व बघेरा के महत्वपूर्ण जैन मन्दिरो का निर्माण करवाया।6 श्वेताम्बर जैन धर्म के साधु जिनदत्तसूरी का जन्म ई. 1122 में हुआ था तथा मृत्यु ई. 1154 में हुई थी। उस समय बहुत बड़ी संख्या में राजपूतों को जैन धर्म में दीक्षित किया। वह साधु दादाजी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्हीं की स्मृति में यह दादाबाड़ी बनाई गई। बड़ी विचित्र सी बात है कि एक तरफ तो देष पर गजनवी और गौरी जैसे क्रूर आक्रमणकारी भारत की भूमि पर तलवारों का सौदा कर रहे थे और दूसरी तरफ खयाली पुलावों की सुगन्ध में डूबा यह साधु क्षत्रियों को जैन धर्म में दीक्षित करके उनके हाथ में तलवार के स्थान पर तराजू पकड़ा रहा था। दादाबाड़ी बीसल सागर झील के किनारे पर स्थित है। इसमें भगवान पार्श्वनाथ का एक मंदिर बना हुआ है। मुख्य मूर्ति पर वि.स. 1535 (ईस्वी 1478) तिथि खुदी हुई है। मंदिर परिसर में कुछ चबूतरे व छतरियां बनी हुई हैं। इनकी तिथियां ई. 1814 से ई. 1859 के बीच की हैं। यह खरतरगच्छ आचार्य जिनदत्तसूरी की निर्वाण स्थली के साथ ही विष्व की प्रथम दादाबाड़ी है।7 जिला मुख्यालय अजमेर में स्थित सोनीजी की नसियों में दो भाग हैं। इनमें से एक नसियां जी और दूसरा स्वर्ण नगरी कहलाता है। नसियां जी में केवल जैन धर्मावलम्बी ही प्रवेष कर सकते हैं। इस भाग में जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ हैं। मुख्य प्रतिमा भगवान ऋशभदेव की है। सिद्ध कूट चैत्यालय सभी के लिए खुला है। कहा जाता है कि इस ''लाल मंदिर'' के निर्माण में कुल चार सौ किलोग्राम सोने का प्रयोग हुआ है। सोनीजी की नसियाँ नाम से विख्यात सिद्धकूट का षिलान्यास 1० अक्टूबर 1864 को सेठ मूलचन्द सोनी ने कराया था। यह मंदिर ई. 1865 में बनकर तैयार हुआ और 26 मई 1865 को इसमें तीर्थंकर श्री ऋशभदेव (आदिनाथ भगवान) की मूर्ति मंदिर की मध्य वेदी में स्थापित की गई। इसके बाद 1870 में नसियां के पिछले भाग में स्थापित भगवान के पंच कल्याणक निर्माण की योजना बनी। एक तरफ इसके लिए भवन निर्माण कार्य चलता रहा और दूसरी तरफ जयपुर में नसियां के दृष्यांकन का कार्य होता रहा। ई. 1895 में इस रचना को मंदिर के पीछे विषाल भवन में स्थापित किया गया। अयोध्या नगरी का निर्माण मुख्य मंदिर के पीछे के भाग में किया गया है। यह दो मंजिला भवन है तथा जनसाधारण के लिए खुला है। इसका निर्माण इस प्रकार से हुआ है कि दो मंजिला होने पर भी यह चार मंजिला दिखाई देता है। इस भवन के षीर्श में वह विषाल गुम्बद तथा आठ छोटे गुम्बद हैं। चारों ओर कलात्मक छतरियाँ बनी हुई हैं। सामने के भाग में झरोखा एवं उसके ऊपर विषाल छतरी षोभायमान है। गुम्बद एवं छतरियों के ऊपर स्वर्ण कलष उनकी षोभा बढ़ाते हैं। ऊपरी भाग लाल पत्थर का बना है।8

मुरूकोट के श्रेष्ठि गोलक ने सिन्हाबल शासित क्षेत्र मे जैन मन्दिर का निर्माण करवाया। मौलक के पिता का नाम पार्श्वनाग था। जिनदत सूरि के समय यह परिवार खरतगुच्छमत अपना लिया। मोलक के चारो पुत्र जिनदत्त सूरि के अनुयायी थे। अजमेर चौहानवंश के पतन के समय यह परिवार पश्चिमी राज0 चला गया।9

बघेरा भी चौहान वस्तुकला का एक जीता जागता नमूना है। हांलाकि इन प्रतिमाओं से उन घनाढय परिवारो की सही जानकारी नही मिल पाती। यहां मृण्मूर्तियो को देखने से स्पष्ट होता है कि यहां कई समृद्धशाली परिवार निवास करते होगे। राजस्थान संग्रहालय अजमेा के विस. 1201 की कुलूनाथ की प्रतिमा से श्रेष्ठी पाल्हू धनपत्ति, विल्हन व हरिशचन्द नामक महत्वपूर्ण परिवारो के नाम प्राप्त होते है। राज0 संग्रहालय अजमेर के सुपार्श्वनाथ प्रतिभा (विस. 1231) पर श्रेष्ठी दरश और उसके पुत्र पाल्हू व भरत के नाम उत्कीर्ण पाये गये है।10

खरतरगच्छ पट्टावली से अनेक श्रेष्ठियो के नाम प्राप्त होते है, जिन्होने विभिन्न निर्माण व धार्मिक कार्य सम्पन्न करवाये। श्रेष्ठी आशाधर जैन ने अजमेर में अिबंका मन्दिर का निर्माण करवाया था। विक्रमपुर जैनचैतयवासियो का दुसरा महत्पूर्ण केन्द्र था। शीघ्र ही यह खरतगढ समुदाय का केन्द्र बन गया। यहां के महत्वपूर्ण अनुयायी मेहर, वीसल, सिन्हिया, व देवधर थे। इनमें देवघर जिनदतसूरि का अत्यन्त प्रिय शिष्य था। देवघर ने विक्रमपुर मे महावीर प्रतिमा लगवायी। जैन समुदाय के गुरूओ के सम्मान में प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन भी रखा जाता था। जिसमें गुरू की फूलमालाओं की जैन समाज के समृद्ध परिवारो द्वारा उच्चतम बोलियां लगायी जाती थी।11

जैन खण्डेलवाल देवपाल के पुत्र नेमीचन्द द्वारा हस्तिनापुर विस. 1237 में नेमीनाथ जैन मन्दिर का निर्माण करवाया। यह खण्डेलवाल परिवार मूल रूप से अजमेर का निवासी था। पृथ्वीराज के शासनकाल में इस परिवार सहित कई जैन परिवार सहित कई जैन परिवार दिल्ली चले गये।12

विस 7191 के शेरगढ शिलालेख से ज्ञात होता है कि खण्डेलवाल परिवार के श्रेष्ठी शान्ता ने यहां शांतिनाथ, कुंथनाथ व अरिस्टनेमी के मंदिरो का निर्माण करवाया।13

खरतगच्छ पट्टावली से ज्ञात होता है कि रामदेव नामक जैन मंत्री अजमेर में निवास करता था। पृथ्वीराज तृतीय उसका विशेष सम्मान करता था। रामदेव ने चौहान रामदरबार में जैन संत जिनदत्त सूरि व पदमप्रभ के बीच शास्त्रार्थ करवाया इसमे जैन संत जिनदत्त विजयी घोषित किये गये। रामदेव भी खरतरगच्छ सम्प्रदाय का कट्टर अनुयायी था। पृथ्वीराज द्वारा जिनदत्त सूरि को जयपत्र प्रदान किया गया व इस उपलक्ष्य में रामदेव द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया है।14

आशाधर प्रसिद्ध जैन पंडित था। उसके माता पिता सालकसेना व रत्ना माण्डलगढ के रहने वाले थे। पृथ्वीराज के सन् 1192 के हार के पश्चात यह परिवार माण्डलगढ से नलकच्छपुर (मालवा) प्रवास कर गये। आशाधर दिगबर मत का अनुयायी था। आशाधर ने जिनयाजनाकल्प व सागरधर्म अमृत नामक पुस्तके लिखी। उसने यह कार्य नलकच्छपुर (मालवा) में विस. 1296 में पूर्ण किया।15

अंग्रेजों के षासन काल में ई. 1908 में भारत सरकार द्वारा अजमेर के दौलतखाना (अकबरी दुर्ग) में राजपूताना म्यूजियम की स्थापना की गई। जिसमें सभी धार्मिक संस्थानो व संस्कृतियो से जुडे अमूल्य प्रतिक रखे गये है। इसका उद्देष्य अजमेर–मेरवाड़ा तथा राजस्थान की अन्य रियासतों से प्राप्त प्राचीन काल की ऐतिहासिक एवम् पुरातात्विक महत्व की सामग्री का संरक्षण करना था। इसमें स्थापित्य के नमूने, मूर्तियां, सिक्के, पेंटिंग्स, अस्त्र–षस्त्र आदि रखे गये। यह संग्रहालय भारत के समृद्ध संग्रहालयों में से एक है। इसमें गुप्त काल से लेकर मध्य काल तक की सामग्री रखी हुई है।16 कामां से प्राप्त गुप्त काल की वैवाहिक मूर्ति, चतुर्मुखी षिव, हर्श नाथ से प्राप्त लिंगोद्भवा महेश्वर, भरतपुर के कटारा एवम् कुसमा क्षेत्र से प्राप्त षिव–पार्वती, अनेक सूर्य, विश्णु हरिहर, लक्ष्मी नारायण, रेवन्त, कुबेर, माता एवं षिषु, सप्तमातृकायें, महिशासुर मर्दिनी, काली, सरस्वती, जैन सरस्वती, गणेष, नागकन्या आदि की मूर्तियां भी यहाँ का विषेश आकर्शण हैं। अजमेर के बाघेरा से प्राप्त 9 वीं षती से 12 वीं षती की मूर्तियाँ बड़ी संख्या में रखी गई हैं। जैन तीर्थंकरों, गोममुख तथा यक्ष मूर्तियां भी बड़ी संख्या में हैं।17 इस प्रकार विभिन्न ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्त्रोतों से ज्ञात होता है, कि चौहानशासनकाल में जैन समुदाय का धार्मिक व आर्थिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है।

lUnHk lph&

1ण आर. वी. सौमानी, पृथ्वीराज चौहान एंड हिज टाईम्स, पेज. 81

2ण पुष्प विजय प्रश्नोतर रत्नमलिक, जैसलमेर संग्रह पेज 77

3ण पुष्प विजय प्रश्नोतर रत्नमलिक, जैसलमेर संग्रह पेज 89

4ण खरतरगद्ध पट्टावली पेज 38

5ण राजस्थान भारती, अंक 9 पेज 19–42

6ण एपिग्राफिया इंडिका–अंक–26 पेज–99

7ण राजस्थान इतिहास एवं संस्कृति, विष्वकोश, हुकमचन्द जैन/नारायण माली, जयपुर, 2008, पृ. 32

8ण राजस्थान जिला गजेटियर, अजमेर, मार्च, 1966, द क्षमा ब्रोस इलेक्ट्रोमेटिक प्रेस, अलवर

9ण पुष्पविजय, हेमअनेकान्तकोश, पेज 131–132

10ण जोहरपुष्कर जैन लेख संग्रह, अंक 50, 101, 167

11ण खरतरगच्छ पट्टावली पेज 19 से 30

12ण जोहरपुष्कर, जैन लेख संग्रह अंक 50, पेज 109

13ण एपिग्राफिया इण्डिका, अंक 31, पेज 83

14ण खरतरगच्छ पट्टावली पेज 25

15ण आर. वी. सोमानी, पृथ्वीराज एण्ड हिज टाईम्स, पेज 162–63

16ण जयपुर रीजन एक्सप्लोरेषन एण्ड एक्सकेवेषन, आर.सी.अग्रवाल, पृ. 3

17ण राजस्थान जिला गजेटियर, अजमेर, मार्च, 1966